SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

साधना भदौरिया, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
विनोद भदौरिया, (Ph.D.)
एम.पी.एस. शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
साधना भदौरिया, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
विनोद भदौरिया, (Ph.D.)
एम.पी.एस. शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर,
मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 17/02/2021
Plagiarism : 03% on 11/02/2021

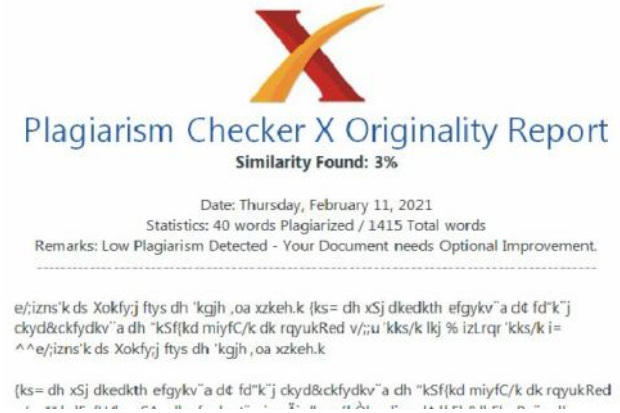
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

Date: Thursday, February 11, 2021
Statistics: 40 words Plagiarized / 1415 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

e/;izns'k ds Xokfy;j ftys dh 'kgjh ,oa xzkeh.k {ks= dh xSj dkedkth efgykv¨a d¢ fd"k¨j ckyd&ckfydkv¨a dh "kSf{kd miyfC/k dk rqyukRed v/;;u 'kks/k lkj % izLrqr 'kks/k i= ^^e/;izns'k ds Xokfy;j ftys dh 'kgjh ,oa xzkeh.k

{ks= dh xSj dkedkth efgykv¨a d¢ fd"k¨j ckyd&ckfydkv¨a dh "kSf{kd miyfC/k dk rqyukRed

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र ''मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' से सम्बन्धित है। ऐसी महिलाएँ जो अपने घर की देखभाल करने के साथ–साथ बच्चों का पालन–पोषण भी करती हैं। ये महिलायें घर को व्यवस्थित करने एवं आगुन्तकों का सत्कार करने के साथ–साथ परिवार के बड़े–बुजुर्गों का ध्यान रखने में समय व्यतीत करती हैं। ऐसी महिलायें गैर कामकाजी महिला या गृहणी कहलाती हैं। ऐसी महिलायें चूंकि घर में रहकर कार्य करती हैं तो उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार की रहती है, क्या वह अपने बच्चों के अध्ययन में सहायता करती हैं? क्या वह बच्चों पर ध्यान दे पाती हैं या उनकी शिक्षा के प्रति जागरूक रहती हैं? प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक करना है।

मुख्य शब्द

गैर कामकाजी महिलायें, शैक्षिक उपलब्धि.

गैर–कामकाजी महिलायें

वे महिलायें जो घर के बाहर जाकर कार्य तो नहीं करती परंतु घर में ही रहकर परिवार में अपने दायित्व का निर्वहन करती हैं, गैर कामकाजी महिलायें कहलाती हैं। गैर कामकाजी महिलाएं बच्चों के पालन पोषण से लेकर उनके व्यक्तित्व निखारने का कार्य बखूबी करती हैं। परिवार में रहकर पूर्ण रूप से अपने बच्चे, पति एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों की देखभाल करती हैं। परिवार में

आय एवं बचत के संतुलन को बनाये रखने वाली गैर कामकाजी महिलायें अपने परिवार के लिए पूर्णतः समर्पित होती हैं। वे अपने बच्चों को घर के काम के साथ–साथ अध्ययन के लिए भी प्रेरित करती हैं।

किशोरावस्था

ब्लेयर, जोन्स और सिम्पसन के अनुसार, ''किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अन्त में आरम्भ होता है और प्रौढ़ावस्था के आरम्भ में समाप्त होता है।''

किशोरावस्था जीवन की आयु का वह भाग है, जिसमें जीवन संबंधी व्यवहार में अपसामान्यताएं दृष्टिगोचर होने लगती हैं, जिनका होना उसके जीवन में स्वाभाविक है। हौलिंगवर्थ के अनुसार ''शिशु का यौन–जीवन जन्मजात है और अन्य अंगो के विकास के साथ–साथ इसका विकास भी क्रमशः द्रुतगति से होता है।'' जिस प्रकार वर्तमान ऋतु आगामी ऋतु की तैयारी मात्र है, उसी प्रकार शैशव भी किशोरावस्था की तैयारी मात्र है।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इस अवस्था की अवधि साधारणतः 7 या 8 वर्ष अर्थात् 12 से 18 वर्ष की आयु तक होती है। इस अवस्था के आरंभ होने की आयु, लिंग, प्रजाति, जलवायु, संस्कृति, व्यक्ति के स्वास्थ्य आदि पर निर्भर करती है। सामान्यतः बालको की किशोरावस्था लगभग 13 वर्ष की आयु में और बालिकाओं की लगभग 12 वर्ष की आयु में आरंभ होती है। भारत में यह आयु पश्चिम के ठण्डे देशों की अपेक्षा एक वर्ष पहले आरंभ हो जाती हैं।

शैक्षिक उपलब्धि

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार– ''शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों को कार्य के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।''

शैक्षिक उपलब्धि दो शब्द शैक्षिक + उपलब्धि के संयुक्त मेल से उत्पन्न हुआ है जहाँ शैक्षिक का अर्थ है शिक्षा के क्षेत्र में तथा उपलब्धि का अर्थ होता है 'प्राप्ति' जब हम शिक्षा के क्षेत्र में कोई प्राप्ति करते है तो इसे शैक्षिक उपलब्धि कहते है। उपलब्धि को निष्पत्ति, सम्प्राप्ति और ज्ञार्नाजन आदि नामों से जाना जाता है।

शैक्षिक जगत में ज्ञान के द्वारा ही बालक का सर्वागीण विकास किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा छात्र की वैयक्तिक सहायता, निर्देशन आदि की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला जाता है। कोई छात्र किसी विशिष्ट क्षेत्र में कितनी उन्नति करता सकता हैः छात्रों की धारणा शक्ति कितनी है और वह अपनी तात्कालिक स्मृति पर प्रयोग किन–किन क्षेत्रों में कर सकता है, इसका पता भी शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा लगाया जाता है।

व्यापक अर्थ में शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ है बालकों को किस परिवेश, साधनों एवं विधियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जा रही है– छात्र ने वर्ष भर में क्या सीखा, शिक्षक ने छात्रों को किन विधियों का प्रयोग कर सिखाया इन सबका मूल्यांकन जिस विधि द्वारा किया जाता है उसे शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैंः

1. शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालकों–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं की किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैंः

1. शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2. ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि

शोधार्थी अपनी परिकल्पनाओं की जांच हेतु समंकों/प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए जिस क्रिया विधि को अपनाता है उसे शोध प्रणाली या शोध विधि कहते हैं। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा कुल 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिनमें शहरी विद्यालयों से गैर कामकाजी महिलाओं के 15 बालक और 15 बालिकाओं को शामिल किया गया है इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र से भी गैर कामकाजी महिलाओं की 15 बालक और 15 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

शैक्षिक उपलब्धि के लिये विद्यार्थियों का पिछले वर्ष का परिणाम लिया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष

परिकल्पना 1 शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 1 : शहरी क्षेत्र गैर की कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
शहरी गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक	61.26	14.81	28	0.01	2.76	1.22
शहरी गैर कामकाजी महिलाओं की किशोर बालिकायें	55.66	9.77		0.05	2.05	

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

28 df पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.76 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.05 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.22 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

शहरी क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं होता है क्योंकि शहरों में बालक–बालिकाओं की पढ़ाई पर पूरी तरह ध्यान दिया जाता है। शहरी क्षेत्र के अभिभावक आधुनिक होने के साथ–साथ बालक और बालिकाओं में कोई अंतर नहीं रखते है और दोनों को समान परिवेश और समान सुविधायें देकर उनकी पढ़ाई का स्तर सुधारना चाहते हैं।

परिकल्पना 2

ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 2 : ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिकता स्तर		टी–मान
ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक	62.60	9.43	28	0.01	2.76	1.54
ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं की किशोर बालिकायें	56.00	13.66		0.05	2.05	

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

28 df पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0ण्01 सार्थकता स्तर पर 2.76 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.05 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.54 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक– बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलायें अपने बालक एवं बालिकाओं को घर के कार्य के अतिरिक्त अधिक ध्यान तो नहीं दे पाती हैं परंतु बालक एवं बालिकायें स्वयं ही अध्ययन में रुचि लेकर अपनी योग्यता बढ़ाते हैं। चूंकि ग्रामीण परिवेश होने की वजह से अध्ययन में अपना श्रेष्ठ देने का दबाव बालक एवं बालिकाओं पर समान रूप से होता है इसलिए वे समान रूप से प्रयास करते हैं। इसीलिए ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सुझाव

- गैर कामकाजी महिलाओं को अपने स्तर पर शिक्षा का महत्व समझ कर बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- गैर कामकाजी महिलाओं पर भी घर के कार्य का अधिक दबाव रहता है तो बच्चों को स्वयं अपने अध्ययन की ओर ध्यान देना चाहिए।
- परिवार में पिता को भी अपने बच्चों के अध्ययन के प्रति सजग रहना चाहिए।
- विद्यालय में शिक्षकों को बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

निष्कर्ष

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं होता है, क्योंकि वातावरण चाहें शहर का हो या ग्राम का हो, मातायें अपने बालक–बालिकाओं की पढ़ाई

पर पूरी तरह ध्यान देती हैं और उनको समान परिवेश और समान सुविधायें देकर अच्छी शिक्षा दिलाकर बालक–बालिकाओं की पढ़ाई का स्तर सुधारना चाहती हैं। शहर में कोचिंग संस्थानों में मातायें बच्चों को भेजती हैं जबकि ग्राम में मातायें यदि पढ़ी–लिखी नहीं होती हैं तो उनके बच्चों पर पढ़ाई के प्रति जिम्मेदारी और बढ़ जाती है इसलिए वे अपनी अध्ययन आदतों में सुधार लाकर पूरे मनोयोग से अध्ययन करते हैं और शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाते हैं, इसीलिए दोनों ही परिवेश की गैर कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि समान रहती है।

संदर्भ सूची

1. आहूजा, राम (2001) *"सामाजिक व्यवस्था",* रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
2. व्होरा, आशारानी (2005) *"आधुनिक समाज में स्त्री"* नटराज प्रकाशन गाजियाबाद।
3. व्होरा, आशारानी (1981) *"भारतीय नारी दशा और दिशाएं"* नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
4. मित्तल, एम.एल. *''शिक्षा सिद्धांत'',* लायल बुक डिपो, मेरठ।
5. जैन, मंजू (1961), *"कार्यशील महिलाओं व सामाजिक परिवर्तन"* प्रिन्टवेल प्रकाशन।
6. कपूर, प्रमिला (1976), *"भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं"* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. यादव, ऊषा (1999), *"हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना"* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. माथुर, एस. एस., (2005). *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

****